विकास की अवस्थाएं →

बालक अलग-अलग विकास की अवस्थाओं में अलग-अलग प्रकार के विकासात्मक व कृत्य सीखता है और उन्हीं के अनुरूप व्यवहार करता है। विकास की हर अवस्था दूसरी अवस्था से भिन्न होती है। विकास की प्रक्रिया को विभिन्न अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है, जो निम्नलिखित है-

1. शैशवावस्था - जन्म से लेकर 5 या 6 वर्ष तक।
2. बाल्यावस्था - 5 या 6 वर्ष से लेकर 12 वर्ष तक।
3. किशोरावस्था - 12 वर्ष से लेकर 18 वर्ष तक।
4. प्रौढ़ा या युवावस्था - 18 वर्ष से लेकर जीवन के अन्त तक।

शैशवावस्था → जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल.

बालक के जन्म लेने के उपरान्त की अवस्था को शैशवावस्था कहते हैं। यह पाँच या छः वर्ष की अवस्था मानी जाती है। नवजात शिशुओं का आकार 19.5 इंच, भार 7.5 पोण्ड होता है। वह माँ के दूध पर निर्भर रहता है और धीरे-धीरे आँखे खोलता है। उसके बाल मुलायम, माँस पेशियाँ छोटी एवं कोमल होती है। जन्म के 15 दिन बाद त्वचा का रंग स्थायी होने लगता है।

परिभाषाएं - शैशवावस्था के महत्व के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के विचारों को उद्धृत कर रहे हैं-

1. एडलर के अनुसार- "बालक के जन्म के कुछ माह बाद

ही यह निश्चित किया जा सकता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है?"

2. स्ट्रैंग के अनुसार - "जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है। यद्यपि किसी भी आयु में उसमें परिवर्तन हो सकता है, पर प्रारम्भिक प्रवृत्तियाँ और प्रतिमान सदैव बने रहते हैं।"

3. न्यूमैन के शब्दों में - "पाँच वर्ष तक की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।"

4. फ्रायड के शब्दों में - "मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है, वह चार-पाँच वर्षों में बन जाता है।"

5. गुडएनफ के अनुसार - "व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है।"

शैशवावस्था की मुख्य विशेषताएं-

शैशवावस्था मानव विकास की दूसरी अवस्था है। पहली अवस्था गर्भ काल है, जिसमें शरीर पूर्णतः बनता है और शैशवावस्था में उसका विकास होता है। शैशवावस्था की विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

1. शारीरिक विकास में तीव्रता - शैशवावस्था के प्रथम तीन वर्षों में शिशु का शारीरिक विकास अतितीव्र गति से होता है। उसके भार और लम्बाई में वृद्धि होती है। तीन वर्ष के बाद विकास की गति धीमी हो जाती है। उसकी इन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों, आन्तरिक अंगों, मांसपेशियो

Scanned with CamScanner

आदि का क्रमिक विकास होता है।

2. मानसिक ~~विकास~~ क्रियाओं में तीव्रता- शिशु की मानसिक क्रियाएं जैसे- ध्यान, स्मृति, कल्पना, संवेदना और प्रत्यक्षीकरण आदि के विकास में पर्याप्त तीव्रता होती है। तीन वर्ष की आयु तक शिशु की लगभग सभी मानसिक शक्तियां कार्य करने लगती हैं।

3. सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता- शिशु के सीखने की प्रक्रिया में बहुत तीव्रता होती है और वह अनेक आवश्यक बातों को सीख लेता है।

गेसल का कथन है- "बालक प्रथम छः वर्षों में बाद के 12 वर्षों से दोगुना सीख लेता है।"

4. दूसरों पर निर्भरता- जन्म के बाद शिशु कुछ समय तक बहुत असहाय स्थिति में रहता है। उसे भोजन और अन्य शारीरिक आवश्यकताओं के अलावा प्रेम और सहानुभूति पाने के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। वह मुख्यतः अपनी मां पर निर्भर रहता है।

5. आत्म-प्रेम की भावना- शिशु में आत्म-प्रेम की भावना बहुत तीव्र होती है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहन आदि का प्रेम प्राप्त करना चाहता है, परन्तु साथ ही वह यह भी चाहता है कि प्रेम उसके अलावा और किसी को न मिले।

Scanned with CamScanner